अलौकिक मालाओं का श्रृंगार

रोज अमृतवेले फरिश्ता रूप में सूक्ष्मवतन पहुंचकर स्वयं के गले में बापदादा से सोलह मालाएं डलवानी हैं, स्वयं का श्रृंगार करवाना है।

मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप की देह छोड़कर प्रकाशमय कायाधारी फरिश्ता सूक्ष्मवतन में बापदादा के पहुंच गया हूं..। सूक्ष्मवतन में चारों ओर आकर्षणमय चांदनी ही चांदनी है..., सामने हीरे मोतियों से जगमगाती लाईट के एक बड़े सिंहासन पर बापदादा विराजमान हैं...., मुझ फरिश्ते को देखते ही बापदादा ने अपनी बाहें फैला दी...., बाबा कह रहे हैं आओ मेरे फरिश्ते बच्चे... मैं तो तुम्हारा ही इंतजार कर रहा हूं...., मैंने तुम्हारे लिए मालाएं बनाई हैं... बापदादा एक-एक करके मेरे गले में मालाएं पहना रहे हैं...मालाओं से श्रृंगार कर रहे हैं......।

1. ज्ञान की माला ... बापदादा के हाथ में अचानक से चमकती हुए एक माला आती है..., बाबा कह रहे हैं बच्चे यह ज्ञान की माला तुम्हारे गले में डाल रहा हूं... इस माला को रोज देखते रहना और बाबा कह रहे हैं अच्छा बच्चे दस प्वाइंट बताओ कि तुम्हें बाबा ने कौन-कौन सा ज्ञान दिया है..., मैं फरिश्ता कह रहा हूं कि बाबा ने मुझे सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान दिया है..., ड्रामा का ज्ञान दिया है..., रचता-रचना का ज्ञान दिया है..., कर्मों का ज्ञान दिया है..., 84 जन्मों का ज्ञान दिया है..., बाबा को याद करने का ज्ञान दिया है..., हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहने का ज्ञान दिया है..., ड्रामा को साक्षी होकर देखने का ज्ञान दिया है..., सकाश देने का ज्ञान दिया है..., बाबा का परिचय देने का ज्ञान दिया है..., बाबा कह रहे हैं ठीक है बच्चे तुमने 11 प्वाइंट सुना दिये... ऐसे ही रोज ज्ञान की माला पहनकर ही रखना, उतारना नहीं..., जी बाबा।

2.गुणों की माला.... अच्छा बच्चे अब बाबा तुम्हें 36 दिव्यगुणों की माला पहना रहे हैं..., अच्छा बच्चे बताओ 10 दिव्यगुण बताओ .., अन्तर्मुखता, आज्ञाकारी, ईमानदारी, गम्भीरता, गुणग्राहकता, दृढ़ता, धैर्यता, नम्रता, परोपकार, पवित्रता, मधुरता...., हां बच्चे ऐसे सभी गुणों की माला पहनकर रखना..., दिव्यगुणों से सजे सजाये रहना....।

3. शक्तियों की माला.... अब बाबा तुम्हें शक्तियों की माला पहना रहे हैं... इस माला में देखो बच्चे कौन कौन-सी शक्तियां हैं..... बाबा इस माला में सत्यता की शक्ति की है, सहनशक्ति है, पवित्रता की शक्ति है, परखने की शक्ति है, निर्णय करने की शक्ति है, स्नेह की शक्ति है, संगठन की शक्ति है, सामना करने की शक्ति, समेटने की शक्ति है, निर्भयता की शक्ति है... बाबा कह रहे हैं वाह बच्चे वाह.... ऐसे ही सर्वशक्तियों से संपन्न रहना और कितनी शक्तियां है उसका मन ही मन चिन्तन कर उन्हें कार्य में लगाना...., मैं कह रहा हूं जी बाबा....।

4. वरदानों की माला ..., मेरे मीठे बच्चे अब बाबा तुम्हें वरदानों की माला पहना रहे हैं ...., सदा विजयी रतन भव, सर्व शक्तियों से संपन्न भव, सदा जागती ज्योति भव, सदा स्वराज्य अधिकारी शक्तिशाली आत्मा भव, संपूर्ण निर्विकारी आत्मा भव, निरन्तर योगी भंव, सर्व के सहारेदाता भव, मास्टर बीजरूप के स्मृतिस्वरूप भव, बाप समान विश्वकल्याणकारी भव, अव्यक्त वतनवासी फरिश्ता भव... ऐसे रोज बाबा से वरदानों की माला लेने के वतन में आना और माला पहनकर ही कर्म करना है....., बाबा कह रहे हैं अच्छा बच्चे अभी बाकि की 12 मालायें मैं तुम्हारे गले में डाल रहा हूं.. उन मालाओं को ध्यान से देखकर उन्हें पहनना और उन मालाओं में कौन कौन-से ज्ञान-योग के हीरे मोती लगे है मुझे आकर वतन में बताना........।

सोलह मालाएं जो अमृतवेले रोज वतन में जाकर पहननी हैं :-

1. ज्ञान की माला, 2. दिव्य गुणों की माला, 3. सर्व शक्तियों की माला, 4. अतिन्द्रिय सुख की, 5. सम्पूर्ण पवित्रता की माला, 6. खुशी की माला, 7.पुण्य कर्म की माला, 8. सन्तुष्टता की माला, 9. दुआओं की माला, 10 समर्थ स्मृतियों की माला, 11. वरदानों की माला, 12. विजयी माला, 13. परमात्म प्रेम की माला, 14. विशेषताओं की माला, 15. प्राप्तियों की माला, 16, सम्पन्नता, समीपता व संपूर्णता की माला।